केरल रीडर
हिन्दी

KERALA READER
HINDI

STANDARD VII

Price: 75 nP.

1964

केरल रीडर
हिन्दी

KERALA READER
HINDI

STANDARD VII

1964

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है, सारे भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।

मैं अपने देश को प्यार करता हूँ और उसकी संपन्न और विविध परंपरा पर गर्व करता हूँ।

मैं सदा उसके योग्य रहूँगा। मैं अपने माता-पिताओं, गुरुजनों और बड़ों का आदर करूँगा और प्रत्येक से सम्मान-पूर्ण व्यवहार करूँगा। मैं प्राणियों पर दया रखूँगा।

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों पर श्रद्धा रखूँगा। उनकी उन्नति और समृद्धि पर ही मेरा सुख निर्भर है।

प्रस्तावना

"केरल हिन्दी रीडर" माला की यह दूसरी रीडर है। यह केरल के मिडिल-स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई केलिए नये पाठ्य-क्रम के अनुसार लिखी गयी है।

विद्यार्थियों के स्तर और उम्र को ध्यान में रखते हुए विषयों और पाठों का चयन बडी सावधानी से किया गया है।

हर एक पाठ के अंत में अभ्यास के साथ साथ निश्चित प्रणाली के अनुसार व्याकरण भी दिया गया है।

आशा है कि अध्यापक और विद्यार्थी इससे फ़ायदा उठायेंगे।

शिक्षा विभाग,
केरल सरकार।

पाठ–सूची

पाठ १

प्रार्थना

ईश्वर ने संसार बनाया।
है सब जगह उसी की माया॥
मीठे फल अच्छी तरकारी।
हरी-भरी फूलों की क्यारी॥

अन्न, दूध, दधि, घोडा गैया।
माता-पिता, बहिन और भैया॥
नदी और वन पर्वत सारे।
सूर्य, चन्द्र, चमकीले तारे॥

सभी दिया ईश्वर ने हमको।
सुखी किया ईश्वर ने हमको॥
बहुत प्यार हम से करता है।
कष्ट हमारे सब हरता है॥

हम भी उसको प्यार करेंगे।
चरण कमल पर शीश धरेंगे॥
ईश्वर! ऊँचा हमें उठाना।
खूब पढाना खूब लिखाना॥

अभ्यास

१. अर्थ लिखो:—तरकारी, क्यारी, चमकीला।

२. जवाब दो:—

(१) किसने संसार बनाया?

(२) ईश्वर ने हम को क्या क्या दिये हैं?

(३) कौन हमारा कष्ट दूर करता है?

(४) ईश्वर से कवि क्या प्रार्थना करते हैं?

३. अर्थ बताओ:—

"सभी दिया.........सब हरता है।"

४. यह कविता कंठस्थ करो।

पाठ २

सबेरा

देखो, पूरब में सूरज निकल रहा है। पेड़ों पर चिड़ियाँ चहक रही हैं। रोशनी फैल रही है। पक्षी उड रहे हैं। धीमी हवा बह रही है। पत्ते हिल रहे हैं। सुन्दर फूल खिल रहे हैं। खुशबू आ रही है। प्रकृति प्रसन्न हो रही है।

किसान हल लेकर खेत जा रहे हैं। उनके आगे बैल चल रहे हैं। कुछ औरतें दूध दुह रही हैं। कुछ स्त्रियाँ पानी भर रही हैं।

अब सोने का समय नहीं। तुम भी बिस्तर से उठो। हाथ मुँह धोओ और अपना सबक सीखो।

अभ्यास

१. अर्थ बताओ:—

चहकना, रोशनी, खिलना, खुशबू, बिस्तर।

२. वाक्यों में प्रयोग करो:—दुहना, पानी भरना।

३. जवाब दो:—

(क) सूरज कहाँ निकलता है?

(ख) चिड़ियाँ क्या करती हैं?

(ग) सवेरे प्रकृति की सुन्दरता कैसी है?

(घ) किसान क्या करते हैं?

(ङ) औरतें क्या-क्या करती हैं?

(च) सवेरे उठकर हमें क्या करना चाहिए?

व्याकरण

तात्कालिक वर्तमान काल :—

जैसे :—जा रहा है; फैल रही है; उड रहे हैं; दुह रही हैं।

नीचे लिखे वाक्यों को तात्कालिक वर्तमान काल में बदलो :—

(१) राम खेलता है। (२) लड़के स्कूल जाते हैं।
(३) चिडिया चहकती है। (४) औरतें पानी भरती हैं।
(५) मैं चाय पीता हूँ। (६) तुम काम करते हो।

तात्कालिक वर्तमान कालिक क्रियाओं से वाक्यों को पूरा करो :—

(१) हम पाठ — — —।
(२) तुम क्या — — —।
(३) मैं दूध — — —।
(४) बहन हिन्दी — — —।
(५) अध्यापक पाठ — — —।

पाठ ३

बच्ची तू सो जा

शाम हुई। पश्चिम सागर में सूरज डूबा। अंधेरा हुआ। रात आई।

आसमान पर तारे चमके। चिडियाँ घोंसलों में सो गईं। उनकी चहक बंद हुई। चिडियों के बच्चे भी सोये।

इन्दिरा बिस्तर पर लेट गई। उसकी माँ भी उसके साथ लेटी।

इन्दिरा को पिताजी की चिन्ता आई। वह पूछने लगी :- पिताजी कहाँ हैं, अम्माँ?

अम्माँ बोली :- वे बाहर गये हैं।

इन्दिरा—पिताजी कब घर आयेंगे?

माँ—वे अभी आते होंगे?

इन्दिरा—तो वे मेरेलिए मिठाई लाते भी होंगे?

माँ—क्यों नहीं! मिठाइयाँ लाते ही होंगे।

इन्दिरा—कौन सी मिठाइयाँ लायेंगे?

माँ—जलेबी, लड्डू, पेडा, मलाई, और चोकलैट!

इन्दिरा—बडी देर हो गई। फिर भी पिताजी नहीं आये। क्या वे आज आयेंगे भी?

माँ—बेटी, वे आज ही आयेंगे। अभी आयेंगे। वे तेरी बातें सोचते ही होंगे। शायद इस समय वे मिठाइयाँ खरीदते होंगे। अच्छी अच्छी मिठाइयाँ! थैली भर!

तू सो जा। आते ही वे तुझे जगायेंगे और दोनों हाथों में मिठाइयाँ भर देंगे।

मेरी प्यारी बच्ची, मेरी लाडली बच्ची, तू सो जा।

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

आसमान, डूबना, अंधेरा, घोंसला, बिस्तर, लाडला, थैली, चमकना, भरना।

जवाब दो :—

(१) सूरज कहाँ डूबता है?

(२) तारे क्या करते हैं?

(३) इन्दिरा क्या करती है?

(४) माँ कहाँ लेटती है?

(५) इन्दिरा माँ से क्या क्या पूछती है?

(६) माँ इन्दिरा को कैसे शान्त करती है?

व्याकरण

संदिग्ध वर्तमान काल :—

जैसे :— आता होगा, खेलती होगी, पढ़ते होंगे; गाती होंगी।

संदिग्ध वर्तमान काल में वाक्यों को बदलो :—

(१) गाडी आ रही है। (२) पेड से फल गिरता है। (३) वे बंबई से आ रहे हैं। (४) लड़कियाँ सबक सीखती हैं।

संदिग्ध वर्तमान कालिक क्रियाओं से वाक्यों को पूरा करो :—

(क) मोहन शाम को घर — —। (आ)

(ख) अब गोपाल हिन्दी — —। (पढ़)

(ग) लोग गाना — —। (सुन)

(घ) औरतें बातें — —। (कर)

(ङ) सीता सभा में — —। (गा)

पाठ ४

रेल गाड़ी

क्या, तुमने रेलगाडी देखी है? यह बडी लंबी गाडी है, जो लोहे की दो पटरियों पर चलती है।

गाड़ी के आगे इंजन रहता है। यह गाड़ी को खींचता है। इंजन भाप से चलता है। एक रेलगाड़ी में करीब पन्द्रह डिब्बे होते हैं। इन डिब्बों में बैठकर हम यात्रा करते हैं।



अब रेलगाड़ियों में कई सुविधायें होती हैं। बिजली की बत्तियाँ, पंखे, गद्देदार बैठकें, सोने की जगह आदि तीसरे दर्जे में भी होती हैं।

गाड़ी के सब से पीछे वाले डिब्बे में एक अफ़सर रहता है। उसको गार्ड कहते हैं। गार्ड की आज्ञा से ड्राइवर गाड़ी को चलाता है और रोकता है। गार्ड के हाथ में दो झंड़ियाँ रहती हैं। एक झंड़ी लाल होती है; दूसरी हरी। हरी झंड़ी देखने पर ड्राइवर गाडी को चलाता है। लाल झंडी देखने पर वह गाडी को रोकता है। रात में झंडी के बदले हरी और लाल लालटेनें काम में आती हैं।

रेल का किराया थोडा होता है। दस मील की यात्रा केलिये करीब तीस नये पैसे देने होंगे। रेलगाडी की चाल तेज़ होती है। यह गरीबों की सवारी है।

दूसरे और तीसरे दर्जों में कभी कभी भीड अधिक होती है। तब डिब्बों के भीतर के लोग दरवाज़ा नहीं खोलते। इसलिये कोई कोई यात्री पावदान पर खडे होकर यात्रा करते हैं। कुछ लडके शौक से भी पावदान पर ख़डे होते हैं। यह बहुत बुरा है। हाथ छूट जाने

से आदमी नीचे गिर पडते हैं और चोट लग जाती है। कोई मर भी जाता है। कोई बाहर खडा हो तो दरवाज़ा खोलकर उसे भीतर ले लो।

हमें यह चाहिए कि अपने डिब्बे के सब आदमियों से प्रेम से बोलें और अच्छा व्यवहार करें। बीडी, सिगरैट आदि न पिएँ। माल-असबाब बैठकों पर न रखें। डिब्बों में कूडा न फैलाएँ। फ़र्श पर फलों के छिलके न डालें। चीज़ खाकर कूडा खिडकी से बाहर फेंक दें। डिब्बों में न थूकें। नाक न छिनकें। खिडकी से अपना सिर या हाथ कभी बाहर न निकालें।

रेलगाड़ी आम जनता की सवारी है। हमेशा उस में बडी भीड होती है। इसलिए यात्रा करते समय ज़्यादा माल-असबाब अपने साथ न लें।

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

लोहा, पटरी, करीब, डिब्बा, गद्देदार, लालटेन, किराया, पावदान, शौक, कूडा, फ़र्श, छिलका, थूकना, छिनकना, झंड़ा, भीड़।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

माल-असबाब, आम जनता, बिजली की बत्ती।

जवाब दो :—

(१) रेल गाडी किस पर चलती है?

(२) इंजन कैसे चलता है?

(३) रेल गाडी में कौन सी सुविधायें होती हैं?

(४) गार्ड क्या-क्या काम करता है?

(५) गाडी में भीड होने पर कुछ लोग क्या करते हैं?

(६) यात्रा करते समय हमें किन किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए?

(७) 'रेल गाडी आम जनता की सवारी है।' कैसे?

व्याकरण

संभाव्य भविष्यत् काल :—

जैसे :– वह पाठ पढे।

लडके गेंद खेलें।

मैं वहाँ जाऊँ।

औरतें यहाँ बैठें।

संभाव्य भविष्यत् कालिक क्रियाओं से वाक्यों को पूरा करो :–

(१) आप केलिए मैं चाय — ? (ला)

(२) वे आज सभा को — । (जा)

(३) लड़की यहाँ न — । (आ)

(४) हम शाम को सिनेमा — । (देख)

(५) गोपाल दूकान से कलम — । (खरीद)

शुद्ध करो :–

(१) लड़कियाँ जा रहा है।

(२) बहनें यहाँ आये ?

(३) हम सिनेमा देखूँ।

(४) माँ भोजन बनाते होंगे।

(५) सीता पाठ पढ़ता होगा।

(६) मैं अंदर आवे ?

पाठ ५

भारत प्यारा

भारत प्यारा देश हमारा।
हम उसके ही नन्हें बच्चे॥
कितने सच्चे कितने अच्छे।
है सब से ही प्रेम हमारा।
भारत प्यारा देश हमारा॥
नहीं किसी से डरते हैं हम।
पढ़ते हैं हम, बढते हैं हम।
पढ़ना लिखना ध्येय हमारा।
भारत प्यारा देश हमारा॥

अभ्यास

I. अर्थ बताओ :–

नन्हा, ध्येय

जवाब दो :–

(१) भारत के बच्चे सब लोगों से कैसा व्यवहार करते हैं?

(२) बच्चों का ध्येय क्या है?

II. अर्थ समझाओ :—

'नहीं किसी से ....देश हमारा।'

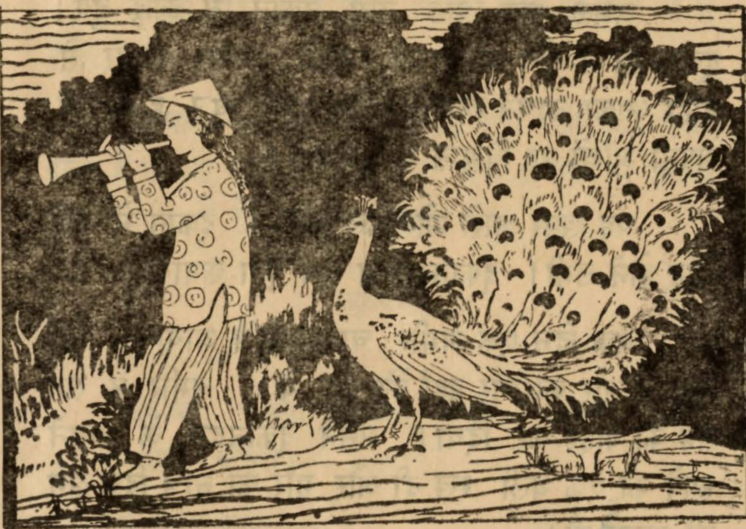
III. यह पद्य कंठस्थ करो।

पाठ ६.

जादू का मोर

जापान में एक गरीब लडका था। उसका नाम नागूची था। वह बडी मुसीबत में था। आखिर एक चायखाने के मालिक को उस पर दया आई। उसने नागूची को अपने पास रखा।

कुछ महीनों के बाद नागूची अपने मालिक से बोला—"मैं अब जा रहा हूँ। आप ने मुझ पर बडी दया की है। यह देखिये......।"



उसने अपनी जेब से एक खडिया निकाली और दीवार पर एक मोर की तसवीर खींच दी।

"जब लोग इकट्ठे होंगे आप तीन बार ताली बजाइये। यह मोर दीवार से बाहर आयेगा और नाचेगा। लेकिन उसे कभी अकेले एक आदमी के सामने न नचाइये।" यह कह कर वह वहाँ से चला गया।

मालिक को लडके की बात पर विश्वास न हुआ। फ़िर भी उसने जांचने का निश्चय किया।

अगले दिन कुछ लोग दूकान में इकट्ठे हुए। दूकानदार ने तीन बार ताली बजायी। मोर दीवार से बाहर आकर नाचने लगा। लोग बहुत खुश हुए। वे अपनी आँखों पर विश्वास न कर सके।

यह खबर चारों ओर फैल गई। दूकान में बडी भीड होने लगी। दूकानदार ने खूब पैसा कमाया।

एक दिन एक अमीर चायखाने में आया। कई किसान और कारीगर वहाँ बैठे हुए थे। अमीर ने उन सब को बाहर कर दिया। उसने दूकानदार के सामने रुपये की एक थैली रख दी और मोर का नाच दिखलाने की आज्ञा दी।

दूकानदार ने थैली देखी। वह सब कुछ भूल गया। उसने तीन बार ताली बजायी। बडी उदासी से मोर दीवार से बाहर आया। एक बार नाचा और लौट गया। दूकानदार ने कई बार ताली बजायी। लेकिन मोर दीवार से न निकला।

उसी दिन रात को नागूची वहाँ आया। उसने बाँसुरी निकाली और उसे बजाने लगा। मोर दीवार से बाहर आया। नागूची आगे आगे चला और मोर पीछे पीछे।

उसके बाद कभी किसी ने उस जादू के मोर को न देखा है।

जापान के बूढे कहते हैं कि ऐसा पक्षी कहीं प्रकट होता है तो वह सभी के लिये है। एक ही आदमी उसको लेना चाहता है तो तुरंत वह गायब होता है।

अभ्यास

अर्थ बताओ:—

मुसीबत, खडिया, तसवीर, दीवार, जाँचना, कारीगर, जादू, बाँसुरी।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

पैसा कमाना, बाहर करना, गायब होना।

जवाब दो: —

(१) नागूची कौन था?
(२) नागूची को किसने अपने पास रखा?
(३) जाते समय नागूची ने दूकानदार से क्या कहा?
(४) अगले दिन दूकानदार ने क्या किया?
(५) अमीर ने क्या आज्ञा दी?
(६) नागूची ने लौटकर क्या किया?
(७) जापान के बूढे लोगों का विचार क्या है?

व्याकरण

नीचे लिखी क्रियाओं से सकर्मक क्रियाओं को चुनो :—

चलना, देखना, पढ़ना, पीना, लेना, जाना, सोना, सीना, रोना, खाना, उठना, देना, करना, गाना, हँसना, कहना, जानना, बैठना, बेचना, दौड़ना, खोलना, मारना, रोकना।

[बोल, भूल, ला, समझ—इन क्रियाओं की विशेषताओं पर अध्यापक ध्यान दें]

पाठ ७

नीम का पेड

नीम का पेड आम के पेड के बराबर ऊँचा होता है। पत्ते छोटे-छोटे और लंबे होते हैं। पत्तों के किनारे दोनों तरफ़ से कटे हुए होते हैं। नीम के पेड को लोग अपने घरों के सामने लगाते हैं। इस से हमेशा छाया रहती है।

नीम का स्वाद कड़ुआ होता है। प्रातः काल होते ही लोग नीम की टहनी तोडकर दातुन करते हैं। इससे दांत बहुत साफ़ और नीरोग होते हैं।

नीम का हर एक भाग काम में आता है। चैत्र-वैशाख के दिनों में इस में फूल लगते हैं। इसकी सुगन्ध अच्छी और लाभकरी होती है।

फूलों के नीचे कुछ दिनों में फल लगते हैं। इनको निम्बौली कहते हैं। ये खाने में कड़ुए होते हैं। इनका रंग हरा होता है। पकने पर इनका रंग पीला हो जाता है और कड़ुआपन भी बहुत कम हो जाता है। गाँवों में छोटे लड़के इनको खाते हैं।

निम्बौली की गुठली में सफेद रंग की गरी होती है। लोग इससे तेल निकालते हैं। यह तेल फोड़े-फुँसी पर लगाया जाता है। निम्बौली से बवासीर में बड़ा लाभ होता।

नीम की छाल या पत्तियों को पानी में उबाल कर नहाने से दाद, खाज, फोडा-फुँसी आदि नहीं होता।

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

बराबर, तरफ़, कड़ुआ, टहनी, निम्बौली, गुठली, गरी, फोडा-फुँसी, बवासीर, छाल।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

काम देना, दातुन करना, फूल लगना।

जवाब दो:—

(क) नीम का पेड कैसा होता है ?

(ख) निम्बौली किसे कहते हैं ?

(ग) निम्बौली से क्या लाभ होता है ?

(घ) नीम का पेड कब फूलता है ?

(ङ) नीम की छाल और पत्तों से क्या लाभ है ?

व्याकरण

शुद्ध करो:—

(१) हम हिन्दी पढ़ रहा हूँ।

(२) वे आज यहाँ आयेगा।

(३) सीता सबेरे पाठ पढ़ता होगा।

(४) लड़कियाँ गाना गाता होगा।

(५) सूरज पूरब में निकल रही है।

(६) हम सब हिन्दी सीखूँ।

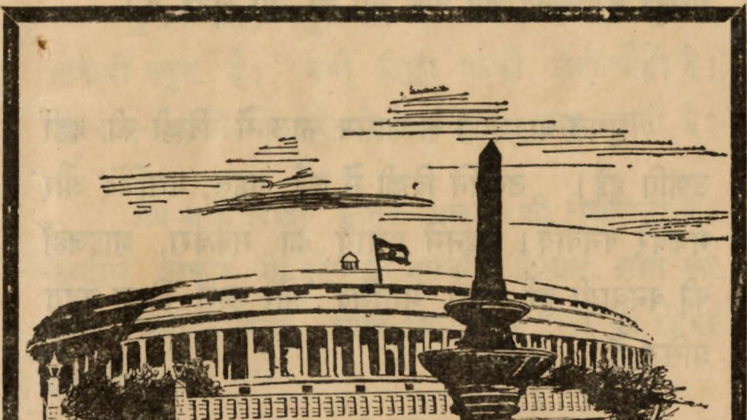
बहुवचन रूप लिखो :—

घोड़ा, नदी, चिडिया, फल, तारा, घर, आँख बूढा, किसान, तसवीर।

पाठ ८

दिल्ली

महाभारत में "इन्द्रप्रस्थ" शहर का नाम आया है। वह पांडवों की राजधानी था। अब वहाँ दिल्ली शहर बसा हुआ है।



दिल्ली के अब दो भाग हैं—पुरानी दिल्ली और नयी दिल्ली। अंग्रेज़ों के आने के पहले जो दिल्ली शहर बसा हुआ था वह पुरानी दिल्ली कहलाता है। अंग्रेज़ों ने जो नया शहर बसाया, वह नयी दिल्ली कहलाता है।

हिन्दू राजाओं के बाद दिल्ली मुसलमानों की राजधानी बनी। कुतुबुद्दीन ने अपनी विजय की याद में एक बड़ा स्तंभ बनवाया। वह कुतुबमीनार के नाम से मशहूर है। वह अब तक ज्यों का त्यों खडा है।

मुगल बादशाहों के शासन काल में दिल्ली की बडी उन्नति हुई। उन्होंने दिल्ली में कई महल, मसजिदें और मकबरे बनवाये। इनमें हुमायूँ का मकबरा, शाहजहाँ की बनवायी हुई जामा मसजिद और लाल किला बहुत प्रसिद्ध हैं।

जामा मसजिद संसार की सब से बडी मसजिद है। यह संगमरमर की बनी है। इसकी कारीगरी बडी

अजीब है। जामा मसजिद फारसी शिल्प कला का अच्छा नमूना है।

मुगलों के बाद दिल्ली अंग्रेजों के हाथ आ गई। सन् १८११ ई० में दिल्ली भारत की राजधानी बनी। तब से लेकर नयी दिल्ली का निर्माण हुआ। गाँधीजी की समाधि पुरानी दिल्ली के पास है। वह यमुना के किनारे है।

पुरानी दिल्ली बहुत तंग है। वहाँ जगह कम और आबादी बहुत है। नयी दिल्ली काफ़ी लंबी-चौडी है। वह बाग-बगीचों और हरे-भरे मैदानों से सुन्दर लगती है।

अब नयी दिल्ली स्वतंत्र भारत की राजधानी है। केन्द्रीय सरकार के बडे-बडे दफ्तर, विधान सभा का भवन, राष्ट्रपति भवन, आदि इमारतें इस शहर की शोभा बढाती हैं।

नयी दिल्ली संसार की मशहूर राजधानियों में एक है।

अभ्यास

अर्थ लिखो :—

याद, बसाना, मशहूर, संगमरमर, अजीब,
नमूना, तंग, आबादी, दफ्तर, इमारत, मकबरा।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

ज्यों का त्यों, हाथ में आना।

जवाब दो :—

(१) दिल्ली के कितने भाग होते हैं ?

(२) नयी दिल्ली किसने बसाई ?

(३) दिल्ली की उन्नति कब हुई ?

(४) कुतुबमीनार कहाँ है ?

(५) उसे किसने बनवाया ?

(६) कौन मसजिद संसार में सब से बड़ी है ?

(७) गाँधीजी की समाधि कहाँ है ?

(८) पुरानी दिल्ली कैसी है ?

(९) नयी दिल्ली में देखने लायक क्या क्या हैं ?

व्याकरण

प्रेरणार्थक क्रियाएँ :—

चलना — चलाना — चलवाना

बनना — बनाना — बनवाना

करना — कराना — करवाना

पढ़ना — पढ़ाना — पढ़वाना

लिखना — लिखाना — लिखवाना

देखना — दिखाना — दिखवाना

देना — दिलाना — दिलवाना

लेना — — — लिवाना

खाना — खिलाना — खिलवाना

पीना — पिलाना — पिलवाना

खेलना — खेलाना — खेलवाना

सोना — सुलाना — सुलवाना

उठना — उठाना — उठवाना

बैठना — बिठाना — बिठवाना

चढ़ना — चढ़ाना — चढ़वाना

दौड़ना — दौड़ाना — दौड़वाना

सुनना — सुनाना — सुनवाना

कहना — कहलाना — कहलवाना

बोलना — बुलाना — बुलवाना

प्रेरणार्थक क्रियाओं से वाक्यों को पूरा करो :—

(१) मैं बढ़ई से एक कुर्सी — —। (बन)

(२) तुम चिट्ठी —। (भेज)

(३) राधा नौकर से काम — —। (कर)

(४) माँ बच्चे को — —। (सो)

(५) तुम गाड़ी को —। (रोक)

(६) हम आप को फिल्मी गीत — —। (सुन)

पाठ ९

डाक–घर

नीरू—तुम कहाँ जा रहे हो, रामू भैया?

रामू—डाक-घर जा रहा हूँ।

नी०—क्यों?

रा०—पिताजी केलिए एक पोस्ट कार्ड खरीदना है।

नी०—उसका दाम क्या है?

रा०—छः नये पैसे।

नी०—एक लिफाफे का दाम?

रा०—कौन सा लिफाफा? साधारण लिफाफा या अन्तर्देशीय पत्र?

नी०—साधारण लिफाफे का।

रामू—पन्द्रह पैसे।

नी०—दूसरे का?

रा०—केवल दस पैसे। क्या, तुम ने इन्हें खरीदा नहीं?

नी०—नहीं भाई। मैं ने डाक घर भी देखा नहीं। मैं डाक घर देखना चाहता हूँ।

रा०—तो मेरे साथ आवो।

(दोनों लडके डाक घर की तरफ़ जाते हैं।)

नी०—डाक घर में क्या-क्या होते हैं?

रा०—डाकखाने में खत, पार्सल और मनीआर्डर भेजने की व्यवस्था होती है। उसके लिए अलग-अलग जगह भी होती है। कुछ बडे डाक-घरों में तार व टेलिफोन का इन्तज़ाम भी होता है।

(इस प्रकार बातें करते करते दोनों मित्र डाक घर पहुँच जाते हैं। नीरू देखता है कि वहाँ छोटी-छोटी कई खिड़कियाँ हैं। हर खिड़की के पीछे एक आदमी बैठा है। खिड़कियों के पास कुछ लोग खडे हैं। कोई लिफाफा

61/53—3

खरीद रहा है तो कोई पोस्ट कार्ड। कोई तार भेजना चाहता है तो कोई रुपये। ये सब देखकर नीरू को बड़ा ताज्जुब होता है।)

नी०—कुछ लोग चिट्ठी-पत्रियों को उस लाल डिब्बे में डालते हैं। यह क्यों?

रा०—ठीक समय पर डाक घर का चपरासी डिब्बे से सब चिट्ठियाँ निकाल ले जाता है। एक अन्य कर्मचारी चिट्ठियों के टिकटों पर मुहर लगाता है।

नी०—फिर क्या होता है?

रा०—डाक घर में सार्टर नामक कर्मचारी होते हैं जो चिट्ठियों को छाँटते हैं। अलग-अलग शहर जानेवाली सभी चिट्ठियों को अलग-अलग थैलों में बाँध देते हैं।

नी०—उसके बाद?

रा०—थैलों को रेलगाडी या हवाई जहाज़ से भेजते हैं।

नी०—मगर वे चिट्ठियाँ ठीक पते पर कैसे पहुँचती हैं, वह भी बताओ।

रा०—भाई, मैं तो बता रहा हूँ। उस शहर के डाकखाने की मुहर भी पत्रों पर लगाते हैं। फिर डाकिये उन्हें ले जाकर पानेवाले के पते पर देते हैं।

नी०—क्या हम डाक टिकटों का दुबारा इस्तेमाल कर सकते हैं?

रा०—कभी नहीं। डाकघर के कर्मचारी टिकटों पर मुहर लगाते हैं, न? तब वे रद्द हो जाते हैं। रद्द टिकटों का इस्तेमाल करना बड़ा अपराध है। कोई ऐसा करे तो उसे जुरमाना देना पडेगा।

नी०—यह तो बडी अच्छी व्यवस्था है। अरे भाई, बडी देर हो गई है। अब लौट जायें।

[दोनों लड़के डाक घर से लौटते हैं।]

अभ्यास

अर्थ बताओ:—डाक, लिफाफा, अन्तर्देशीय, इंतज़ाम, तार, ताज्जुब, चपरासी, कर्मचारी, टिकट, छाँटना, पता, डाकिया, पानेवाला, जुरमाना, दुबारा।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

तार भेजना, ताज्जुब होना, मुहर लगाना, बाँध देना, इस्तेमाल करना।

जवाब दो :—

(१) डाकिया क्या करता है ?
(२) डाक-घर में क्या-क्या काम होते हैं ?
(३) चिट्ठी ठीक पते पर कैसे पहुँचती है ?
(४) टिकटों पर क्यों मुहर लगाते हैं ?
(५) रद्द टिकटों का इस्तेमाल करने से क्या होता है ?
(६) डाक-घर द्वारा हम क्या-क्या भेज सकते हैं ?

व्याकरण

खण्ड 'अ' और 'आ' के वाक्यों को मिलाकर सही वाक्य बनाओ :—

'अ'	'आ'
(१) कोई ऐसा करे	चिट्ठियों को छाँटते हैं।
(२) डाक-घर में सार्टर नामक कर्मचारी होते हैं	कोई रुपये भेजता है।
(३) फिर डाकिये उन्हें ले जाते हैं	उसे जुरमाना देना पडेगा।
(४) कोई तार भेजता है	पानेवाले के पते पर देते हैं।

[और, जो, तो]

पाठ १०

सुबह

रात नहीं अब हुआ सवेरा।
क्यों सोता है मंगल मेरा ॥ १ ॥

सूरज का निकला है गोला।
देखो खेल रहा है भोला ॥ २ ॥

उठ तुमको नहला दूँगी मैं।
मीठा दूध पिला दूँगी मैं ॥ ३ ॥

ले किताब पढने जाओगे।
अच्छा लड़का कहलाओगे ॥ ४ ॥

चढने को घोडा पावोगे।
रुपया खूब कमा लावोगे ॥ ५ ॥

उठा नहाया, रोटी खाकर।
सिर सुन्दर टीका दिलवाकर ॥ ६ ॥

पहन कोट औ बूट निराला।
हँसते चला मदरसे लाला ॥ ७ ॥

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

गोला, नहलाना, टीका, निराला।

जवाब दो :—

(१) मंगल से माँ क्या कहती है ?
(२) माँ की अभिलाषा क्या है ?
(३) लाला (मंगल) ने क्या किया ?

पाठ ११

गेहूँ

हमारे देश में कई तरह के अनाज पैदा होते हैं, जैसे— गेहूँ, चावल, जौ, बाजरा आदि। दक्षिण भारत में चावल अधिक पैदा होता है तो उत्तर भारत में गेहूँ। गेहूँ सब अनाजों से बढ़िया है।

गेहूँ दो तरह के होते हैं। एक का दाना सफेद होता है। इसके आटे की रोटियाँ सफेद होती हैं। दूसरी

तरह का गेहूँ लाल होता है। सफेद गेहूँ की अपेक्षा लाल गेहूँ ज़्यादा अच्छा होता है।

आषाढ के महीने जब वर्षा होती है तब किसान हल चलाकर खेत तैयार करते हैं। खेत तैयार करते समय खाद डालते भी हैं। पाँच सात बार हल चलाना पडता है। इस से ज़मीन अच्छी तरह खुद जाती है। फिर उसमें पटेला फेर कर मिट्टी बराबर कर दी जाती है। कार्तिक के महीने में किसान उसमें बीज बोते हैं। उसके बाद खेत में पानी देते हैं। सात-आठ दिनों में अंकुर निकल आते हैं। कुछ दिनों में ये बढकर बडे हो जाते हैं।

पौधों के साथ कुछ घास भी उग आती है। उसे धीरे-धीरे खुरपे से निकालना पड़ता है। इसे निराना कहते हैं। पौधों को समय समय पर पानी देना भी चाहिये। इससे पौधे खूब बढ़ते हैं और पैदावार अधिक होती है।

पूस-माघ के महीने में पौधों में बालियाँ निकलती हैं। कुछ दिनों में उनमें दाने आ जाते हैं। बालियों से भरे हुए खेत को देखकर किसान को बडी प्रसन्नता होती है। सूरज की गर्मी पाकर ये बालियाँ

फागुन और चैत तक पक जाती हैं। तब इनको काटकर बैलों की सहायता से दाना निकाल लेते हैं। इस प्रकार सात-आठ महीने बाद गेहूँ तैयार होता है। गेहूँ को हम लोग खाते हैं। गाय, भैंस, बैल आदि जानवरों के खाने में फूस काम आता है।

किसान का जीवन बड़े परिश्रम का है। सर्दी, गर्मी और वर्षा को सहता हुआ किसान दिन-रात परिश्रम करता रहता है। उसे झूठ-कपट के लिए अवसर नहीं। परिश्रम ही उसका भजन-पूजन है। इसी के कारण सबको उसका आदर करना चाहिए।

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

चावल, जौ, बढ़िया, दाना, खाद, अंकुर, उगना, खुरपा, निराना, बाली, फूस, पैदावार।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

हल चलाना, बीज बोना, काम आना।

जवाब दो :—

(१) उत्तर भारत में किन किन अनाजों की खेती होती है ?
(२) दक्खिन में कौन-सा अनाज ज़्यादा पैदा होता है ?
(३) किसान खेत कैसे तैयार करते हैं ?
(४) गेहूँ कितने प्रकार के होते हैं ?
(५) गेहूँ की खेती कब शुरू होती है ?
(६) पटेला फेरने का फायदा क्या है ?
(७) निराना किसे कहते हैं ?
(८) कितने महीनों में गेहूँ तैयार हो जाता है ?
(९) किसानों का जीवन क्यों कठिन होता है ?
(१०) किसानों का आदर क्यों करना चाहिए ?

व्याकरण

कोष्ठकों में दिये हुए प्रत्ययों से वाक्यों को पूरा करो :—

(१) हमारे देश — कई तरह — अनाज पदा होते हैं। (से, में, के, की)
(२) गेहूँ सब अनाजों — बढ़िया है। (में, से)
(३) समय समय — पानी भी देना चाहिए। (में, से, पर)

(४) बैलों — सहायता — दाना निकालते हैं।
(का, की, में, से)

(५) यह अंगूठी सोने — बनी है। (से, की)

लिंग बताओ :—

अनाज, महीना, रोटी, पानी, बाली, अंकुर, मिट्टी, बीज, फूस, पैदावार, पौधा, घास।

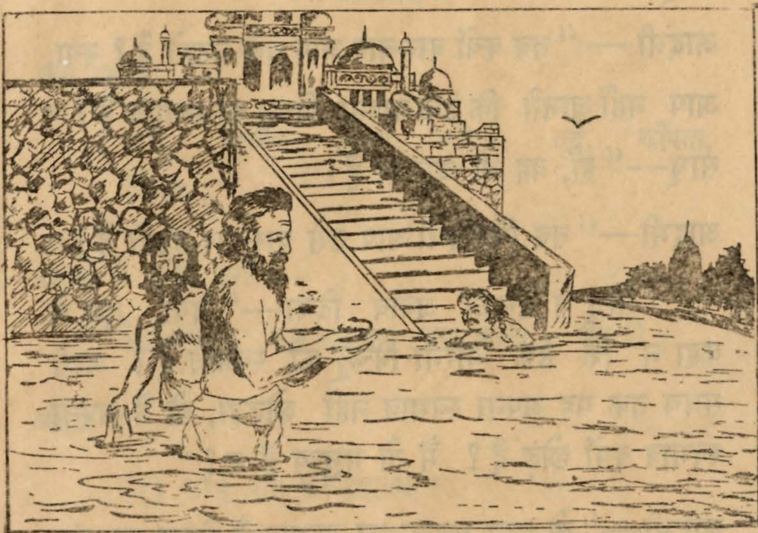
पाठ १२

साधू की दयालुता

एक साधू गंगा में नहा रहे थे। उनके पास ही और कुछ लोग भी नहा रहे थे। धारा खूब तेज़ थी। इस समय एक अधमरा बिच्छू पानी पर तैरता हुआ आया। वह साधू के पास से होकर निकला।

बिच्छू को देखकर साधू को दया आयी। उन्होंने उसे बचाना चाहा। बिच्छू को हाथ पर उठाकर वे

किनारे की ओर चले। तुरन्त बिच्छू ने ज़ोर से डंक मारा। साधू का हाथ कांप गया। बिच्छू पानी में गिर गया। वह डूबने लगा।



साधू तुरन्त उसे फिर हथेली पर उठाकर किनारे की ओर चले। बिच्छू ने फिर डंक मारा। साधू का हाथ फिर कांपा। बिच्छू फ़िर पानी में गिरा। इस तरह कई बार हुआ।

किनारे के लोग यह सब देख रहे थे। एक आदमी ने पूछा, "क्यों महाराज, क्या बिच्छू के डंक से आप को दर्द नहीं होता?"

साधू बोले — "क्यों नहीं होता?"

आदमी — "तब क्यों बार-बार आप उसे उठाते हैं? क्या, आप नहीं जानते कि डंक मारना बिच्छू का स्वभाव है?"

साधू—"हाँ, वह भी जानता हूँ।"

आदमी—"तब फिर क्यों आप उसे बार-बार उठाते हैं?"

साधू ने हँसकर जवाब दिया—"भैया, तुम ने कहा न कि डंक मारना बिच्छू का स्वभाव है? मरते समय तक यह अपना स्वभाव नहीं छोडता, तो मैं अपना स्वभाव क्यों छोड़ दूँ? मैं तो मनुष्य हूँ न?"

आदमी—"तो क्या मनुष्य का स्वभाव है बिच्छू का डंक सहना?"

साधू ने बिच्छू को किनारे की ओर लाते हुए कहा—"नहीं। मनुष्य का स्वभाव है दया करना; दुखी जीव का दुःख दूर करना। इसके लिए कुछ कष्ट उठाना पडे तो उसे सहना।"

बिच्छू डंक मारता ही रहा। साधू ने उसे पानी से निकाला और किनारे पर छोड दिया।

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

घारा, अधमरा, तैरना, हथेली, दर्द, काँपना, किनारा।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

डंक मारना, कष्ट उठाना, दया करना, जोर से।

जवाब दो :—

(१) साधू क्या कर रहा था?

(२) अधमरे बिच्छू को देखकर साधू ने क्या किया?

(३) बिच्छू ने क्या किया?

(४) लोगों ने साधू से क्या पूछा?

(५) साधू ने क्या जवाब दिया?

(६) इस कहानी से हमको क्या शिक्षा मिलती है?

व्याकरण

सामान्य भूतकाल :—

जैसे :– आया, आये, आयी, आयीं।

नीचे दिये वाक्यों को सामान्य भूतकाल में बदलो :—

(अ) छोटी बच्ची सोती है।

(आ) बिच्छू साधू के पास से होकर निकलेगा।

(इ) साधू का हाथ काँपता है।

(ई) बिच्छू पानी में गिर रहा है।

(उ) साधू बिच्छू को लेकर चलता है।

शुद्ध करो :—

(१) लोग यह सब देख रहा है।

(२) लड़कियाँ खूब तैरते होंगे।

(३) बिच्छू फिर पानी में गिरी।

(४) साधू में दया आया।

(५) मैं अपनी स्वभाव को क्यों छोड़ दें।

पाठ १३

गोपाल कृष्ण गोखले

पाठशाला शुरू हुई। अध्यापक ने सब लड़कों से पूछा—"तुम सब अपनी कापियाँ लाये?" सब लड़के अपने अपने स्थान पर खडे हो गये। एक एक करके सब ने अपनी कापियाँ दिखाईं। अध्यापक ने देखा कि बहुतों



ने सवाल किया ही नहीं। कुछ लड़कों ने किया है तो गलत ही किया है। केवल गोपाल ने ठीक किया है।

यह देख गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने गोपाल की पीठ पर हाथ फेरा। गुरुजी ने सबके सामने उसकी प्रशंसा की और उसे वर्ग में सब से आगे बैठने को कहा।

सहसा गोपाल की आँखों में आँसू आ गये। वह रोने लगा।

यह देख कर गुरुजी बडे हैरान हुए। उन्होंने बालक को पास बुलाया, प्यार किया और रोने का कारण पूछा। उसने रोते रोते कहा – "गुरुदेव ! आप मेरी झूठी प्रशंसा कर रहे हैं। मैं इस योग्य नहीं हूँ। मैं ने अपने किसी मित्र की सहायता से यह सवाल किया है। अपने आप नहीं किया है।"

यह सुनकर गुरुजी और भी प्रसन्न हुए। गुरुजी ने आशीर्वाद दिया कि तुम बडे होकर अपने देश का नाम उज्ज्वल करोगे।

गुरुजी का आशीर्वाद सफल हुआ। यही बालक आगे चलकर देश का बड़ा सेवक और महान नेता बना। पूज्य गोखले जी का नाम कौन नहीं जानता?

प्यारे बालको, तुम्हें भी गोपाल कृष्ण की तरह सदा सच बोलना चाहिये और झूठी प्रशंसा से सन्तुष्ट न होना चाहिये।

अभ्यास

अर्थ लिखो :—

गलत, पीठ, आँसू, हैरान।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

हाथ फेरना, हैरान होना, अपने आप, आगे चलकर।

जवाब दो :—

१. अध्यापक ने लड़कों से क्या पूछा?
२. किसने सवाल ठीक किया था?
३. गोपाल क्यों रोने लगा?
४. गोपाल ने गुरुजी से क्या कहा?
५. गुरुजी ने क्या आशीर्वाद दिया?
६. गुरुजी का आशीर्वाद कैसे सफल हुआ?

61/53—4

व्याकरण

आसन्नभूतकाल :—

जैसे :-

आया है, आये हैं, आयी है, आयी हैं, आया हूँ, आयी हूँ, आये हो, आयी हो।

आसन्न भूतकालिक क्रियाओं से वाक्यों को पूरा करो :-

१. हम सबेरे पाँच बजे — —। (उठ)
२. लडके हाथी को देखने के लिए — —। (दौड़)
३. कमला यहाँ — —। (बैठ)
४. छोटी बच्ची — —। (सो)
५. मैं सिनेमा देखकर — —। (आ)

नीचे लिखे वाक्यों को आसन्न भूतकाल में बदलो :—

१. मैं बेंच पर बैठता हूँ।
२. गीता किताब लायेगी।
३. वह उधर जाए।
४. भाई मद्रास से आते होंगे।
५. तुम कितने बजे सोते हो?

पाठ १४

मनुष्यत्व

दो पहर की छुट्टी हो गयी थी। बहुत से लड़के पाठशाला से निकले। सब लड़के उछलते-कूदते, हँसते-चिल्लाते चले जा रहे थे। स्कूल के फाटक के सामने सडक पर एक आदमी लेटा था। किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। सब अपनी अपनी धुन में चले जा रहे थे।

एक छोटे लड़के ने उस आदमी को देखा। वह उसके पास गया। वह आदमी बीमार था। उसने लड़के से पानी माँगा। पास के घर से लड़का पानी लाया। बीमार ने पानी पिया और फिर लेट गया। लड़का खेलने चला गया।

शाम को वह लड़का घर लौटा। उसके पिता से एक सज्जन बता रहे थे कि स्कूल के सामने एक आदमी सड़क पर मरा पडा है। पिता के पास आकर लड़के ने कहा—"बाबू जी, दोपहर को जब मैं ने उसे देखा तब वह मरा नहीं था। मैं ने उसे पानी पिलाया था।"

पिता ने लड़के को डाँटा, "तू मेरे सामने से हट जा! एक बीमार को देखकर भी तू ने उसे छोड़ दिया! उसे अस्पताल क्यों नहीं पहुँचाया?"

डरते-डरते लड़के ने जवाब दिया—"अकेला मैं क्या कर सकता? भला उसे अस्पताल कैसे ले जाता?"

पिता को गुस्सा आया। "बहाना मत बना। तू नहीं ले जा सकता तो अपने अध्यापक से तुरन्त बताता या घर आकर मुझ से बताता। मैं कोई न कोई प्रबन्ध करता।"

विद्यार्थियो, तुम्हीं सोचो कि ऐसी परिस्थिति में तुम क्या करते। किसी बीमार, घायल या दुखी को देखकर भरसक सहायता करते या चले जाते?

अभ्यास

अर्थ लिखो :—

छुट्टी, फाटक, धुन, बीमार, अकेला, बताना, घायल, हटना, डाँटना

वाक्यों में प्रयोग करो :—

उछलना-कूदना, गुस्सा आना, प्रबन्ध करना, भरसक

जवाब दो :—

(१) स्कूल के फाटक पर कौन लेटा था ?
(२) बीमार को देखकर किसने उसपर ध्यान दिया ?
(३) लड़कों ने बीमार पर क्यों ध्यान नहीं दिया ?
(४) बीमार ने उस लड़के से क्या माँगा ?
(५) लड़का कहाँ से पानी लाया ?
(६) शाम को घर आने पर लड़के ने क्या देखा ?
(७) लड़के ने पिता से क्या कहा ?
(८) पिता ने लड़के को क्यों डाँटा ?
(९) इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

व्याकरण

पूर्ण भूतकाल :—

जैसे :—आया था, आये थे, आयी थी, आयी थीं

पूर्ण भूतकालिक क्रियाओं से वाक्यों को पूरा करो :—

(१) तुम यहाँ कब — —। (आ)
(२) वे सभा में — —। (बोल)

(३) ललिता बाज़ार — —। (जा)
(४) लड़कियाँ ज़ोर से — —। (हँस)

शुद्ध करो :—

(१) तुम गाड़ी से आया था।
(२) मेरी छोटी बहन सबेरे उटे थे।
(३) तू कब वहाँ गये थे!
(४) औरतें बाज़ार से चार आम लाये थे!
(५) गोपाल मुझ से वह बात बोली।

पाठ १५

भामाशाह की उदारता

महाराणा प्रताप का नाम तुम ने सुना होगा। वे जीवन भर अकबर से लड़ते रहे। चित्तौड की स्वाधीनता केलिये उन्होंने बहुत कष्ट सहे।

आखिर उन्हें जंगलों में रहना पडा। वहाँ उन्होंने घास-फूस की रोटियाँ खायी होंगी। पत्थरों पर सोये होंगे। उनके बच्चों को खाना भी न मिला होगा। अकबर ने बडे-बडे लालच दिये। पर महाराणा ने पराधीनता कबूल न की।



अब महाराणा को देश की रक्षा असंभव जान पडी। निराश होकर वे देश छोडने को तैयार हो गये।

यह खबर भामाशाह के कानों में पडी। देश के ऐसे संकट में उसने सहायता करने का निश्चय किया। वह अपनी सारी संपत्ति लेकर प्रताप के सामने पहूँचा। सारा धन उनके चरणों पर रखकर बोला—"महाराज, सुना है कि आप इस पुण्य भूमि को छोड़कर जा रहे हैं। इसलिए यह भेंट आपके पास लाया हूँ। आप इसे स्वतंत्रता देवी के चरणों पर चढ़ाइये और देश की रक्षा कीजिये।

महाराणा दंग रह गये। उन्होंने कहा—" भामाशाह, तुम्हारा त्याग अद्भुत है। अगर सब लोग अवसर आने पर अपना अपना धन माता के चरणों पर अर्पण करते तो आज वह गुलाम नहीं होती। पर इस धन से अब क्या होगा ? मैं देश छोडने का निश्चय कर चुका हूँ।

यह सुनकर भामाशाह प्रताप के पैरों पर गिर पड़ा। वह बच्चे की तरह रोने लगा। भामाशाह का त्याग देखकर प्रताप भी रो पडे। भामाशाह को उठाकर उन्होंने गले लगा लिया।

धन बहुत अधिक था। उस से पच्चीस हजार सेना का निर्वाह बारह वर्ष तक हो सकता था। उस धन

से प्रताप ने नई सेना तैयार की। फिर से घमासान लडाई हुई। अंत में प्रताप ने चित्तौड को स्वतंत्र बनाया।

भामाशाह गरीब हो गया। लेकिन उस त्यागी ने मेवाड को धनी बनाया।

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

स्वाधीनता, जंगल, पत्थर, लालच, भेंट गुलाम, घमासान।

वाक्यों में प्रयोग करो :— कबूल करना, लालच देना, कानों में पडना, चरणों पर चढाना, दंग रह जाना, पैरों पर गिरना, गले लगाना; निर्वाह होना।

जवाब दो :—

१. महाराणा प्रताप को क्या क्या कठिनाइयाँ सहनी पडीं ?

२. अकबर ने प्रताप को वश में लाने के लिए क्या किया ?

३. राणा ने देश छोड़ने का निश्चय क्यों किया ?
४. भामाशाह ने उदारता कैसे प्रकट की ?
५. भामाशाह ने महाराणा से क्या प्रार्थना की ?
६. महाराणा ने क्या जवाब दिया ?
७. भामाशाह के धन से प्रताप ने क्या किया ?
८. राणा ने चित्तौड़ की स्वाधीनता की रक्षा कैसे की ?

(उत्तर दस वाक्यों से अधिक न हो ।)

व्याकरण

संदिग्ध भूतकाल

जैसे :— आया होगा, आये होंगे, आयी होगी, आयी होंगी। आया हूँगा, आयी हूँगी, आये होगे, आयी होगी।

नीचे लिखी क्रियाओं का संदिग्ध भूत कालिक रूप लिखो :—

सुन, खेल, चल, दे, पी, ला, सो।

नीचे लिखे वाक्यों की क्रियाओं को संदिग्ध भूतकाल में बदलो : —

१ वह ससुराल गयी है।
२. लड़के पाँच बजे तक खेले थे ।
३. राधा खूब हँसती है ।
४. सूरज पूरब में निकलता है ।
५. बीमार कुछ देर पहले मरा है।

पाठ १६

कोयल

देखो कोयल बोल रही है।
बागों में वह डोल रही है ॥ १ ॥

आमों पर फेरी देती है।
घूम घूम कर रस लेती है ॥ २ ॥

सूरत कैसी काली इसकी।
बोली अजब निराली इसकी ॥ ३ ॥

चाल-ढाल मतवाली इसकी।
मन को हरनेवाली इसकी ॥ ४ ॥

कोयल कूक सुना दे प्यारी।
गुन हमको सिखला दे प्यारी ॥ ५ ॥

हम सब भी गुनवाले होंगे।
हर्ज नहीं जो काले होंगे ॥ ६ ॥

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

बाग, अजब, मतवाला, हर्ज, चाल-ढाल, सूरत।

जवाब दो : —

१. कोयल क्या क्या करती है?

२. कोयल हमें क्या सिखाती है?

३. 'हर्ज़ नहीं जो काले होंगे'—इस से कवि का मतलब क्या है?

४. अर्थ लिखो :—

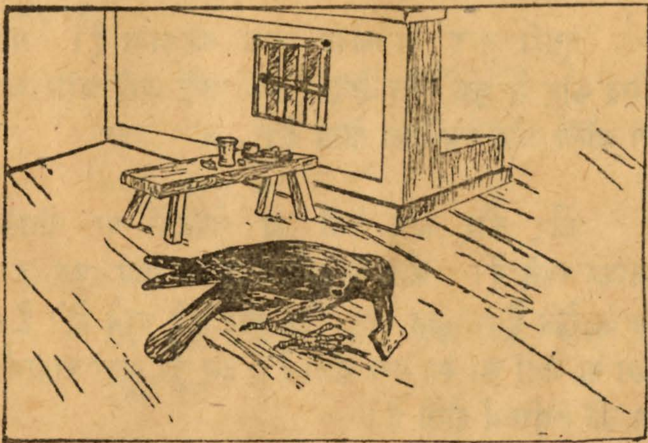
'कोयल............दे प्यारी।'

पाठ १७

कौआ

हमारे देश में सब जगह कौए पाये जाते हैं। सुबह होते ही ये हमारे घरों में आते हैं और काँव-काँव की ध्वनि से हमारी नींद तोडते हैं। शाम होते होते ये दूर

के बाग-बगीचों की ओर उड जाते हैं। वहाँ पेडों पर रात बिताते हैं। फ़िर बडे सवेरे गाँव की ओर लौटते हैं।



घर-आंगन से रोटियाँ चुराकर भागना, इनका रोज़ का काम है। बच्चों के हाथों से भी ये रोटियाँ ले भागते हैं। ढेला मारने पर भी ये नहीं छूटते।

कौए का, पक्षी जगत में कोई मित्र नहीं है। सब से झगडा, सब से विरोध! लेकिन कौओं में आपस का मेल बहुत गहरा होता है।

कौए दो तरह के होते हैं। एक के गर्दन में स्लेटी रंग की चौड़ी पट्टी होती है। शरीर का बाकी हिस्सा

काला होता है। नर और मादा के रूप में कोई फरक नहीं होता। इसे देशी कौआ या घरेलू कौआ कहते हैं।

दूसरी तरह का कौआ काग कहलाता है। यह घरेलू कौए से कुछ बड़ा होता है। इसके सारे शरीर का रंग काला और चमकीला होता है।

कौए और काग पेड़ों की चोटियों पर घोंसले बनाकर रहते हैं। कौए के अंडे नीलापन लिए हुए हरे रंग के होते हैं। उन पर पीले और भूरे धब्बे होते हैं। काग के अंडों का रंग हरा होता है। उन पर गहरे बादामी रंग की चित्तियाँ होती हैं।

अंडे सेने का काम मादा और नर दोनों मिलकर करते हैं। एक जब अंडा सेता है तब दूसरा बाहर बैठकर पहरा देता है। फिर भी कोयल इन्हें धोखा देकर अपने अंडे इनके घोंसले में डाल देती है।

कौए और काग हर तरह की चीज़ें खाते हैं। फसल को हानि पहुँचाने वाले कीड़ों को खाकर ये हमारी मदद भी करते हैं।

अभ्यास

अर्थ लिखो :—

जगह, नींद, चुराना, गहरा, गर्दन, हिस्सा, रंग, पट्टी, फरक, घरेलू, भूरा, अंडा, चोटी, धब्बा, चित्ती, मादा, फ़सल, कीडा, मदद।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

नींद तोडना, ढेला मारना, अंडा सेना, पहरा देना, धोखा देना।

जवाब दो :—

(क) कौए कितने प्रकार के होते हैं?

(ख) कौओं का आपस का मेल कैसा है?

(ग) 'कौए का, पक्षी जगत में कोई मित्र नहीं है।' क्यों?

(घ) काग किसे कहते हैं?

(ङ) कौआ कैसे अंडा सेता है?

(च) कौआ लोगों को कैसे तंग करता है?

(छ) कौआ घोंसला कहाँ बनाता है ?

(ज) काग और कौए के अंडे में क्या फरक होता है ?

(झ) कौआ कहाँ तक लोगों की मदद करता है ?

(ञ) नर और मादा कौए के रूप में क्या फरक है ?

व्याकरण

उचित विभक्ति प्रत्ययों से वाक्यों को पूरा करो :—

१. कौए—पक्षी जगत—कोई मित्र नहीं है।
(के, का, में, से)

२. घर—रोटियाँ चुराकर भागना कौए—
रोज़—काम है। (में, से, कि, के, का)

नाम रूप लिखो :—

काला, बीमार, घरेलू, नीला, चमकीला, गहरा, खुश।

लिंग बताओ :—

रोटी, पक्षी, चीज़, मदद, कीडा, नींद, कोयल, धब्बा, चिट्ठी।

'अ' और 'आ' के वाक्य खण्डों को उचित रूप में जोडकर सही वाक्य बनाओ।

अ	आ
१. कौए के अंडे नीलापन लिए हुए हैं।	उन पर बादामी रंग की चित्तियाँ भी होती हैं।
२. ये बाग बगीचों की ओर उड़ते हैं।	हमारी मदद करते हैं।
३. काँव-काँव की ध्वनि करते हैं।	हरे रंग के होते हैं।
४. काग के अंडों का रंग हरा होता हैं।	वहाँ रात बिताते हैं।
५. ये कीड़ों को खाते हैं।	हमारी नींद टूट जाती है।

पाठ १८

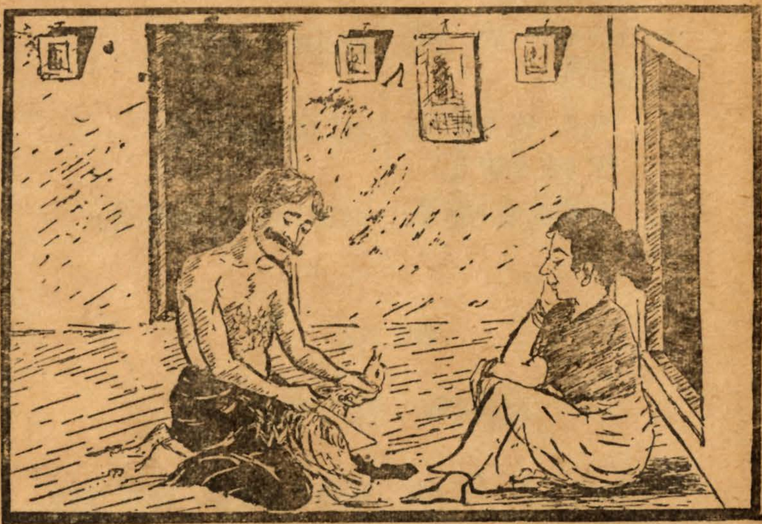
लालच का फल

किसी गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। उसका नाम भोला था।

भोला एक झोंपड़ी में रहता था। उसके साथ उसकी पत्नी और उसके दो बच्चे रहते थे। वह रोज मज़दूरी करके दिन बिताता था। मज़दूरी से उसे बहुत कम पैसे मिलते थे। इसलिए वह बडा दुखी था।

61/53—5

हर दिन वह भगवान से प्रार्थना करता था। 'हे प्रभो, मैं बहुत दुखी हूँ। मेरे जीवन में सुख ज़रा भी नहीं। मेरे सारे दिन बड़े दुख में बीत रहे हैं। मुझे भी अच्छे दिन दिखाना।'



आखिर भगवान की दया उस पर पड़ी। उसे एक मुर्गी मिली। वह एक अजीब मुर्गी थी। वह रोज़ सबेरे एक सोने का अंडा देती थी। कुछ ही दिनों में भोले की गरीबी दूर हुई।

धीरे-धीरे भोला लालची होने लगा। लालच में पड़कर वह सोचने लगा :— 'यह मुर्गी रोज़ एक ही सोने का अंडा देती है। इसके पेट में बहुत से अंडे होंगे। अगर मैं उन सब को एक साथ निकाल लूँ तो मैं एकदम बडा अमीर बन जाऊँगा।'

फिर क्या हुआ? उस ने एक चाकू लेकर मुर्गी का पेट चीर डाला। उसने देखा कि मुर्गी के पेट में एक भी अंडा नहीं है।

* * * * * *

फिर वही गरीबी, वही मेहनत!

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

झोंपडी, मज़दूरी, आखिर, चाकू, मेहनत, चीरना, सारा।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

दिन बिताना, एकदम।

उल्टे अर्थवाले शब्द लिखो :—

गरीब, धीरे, सबेरा, दुखी, झोंपडी, बडा, दिन गाँव, सवाल।

जवाब दो :—

१. भोला कौन था ?
२. भोला कैसे दिन बिताता था ?
३. भोला के पास क्या था ?
४. मुर्गी रोज़ क्या देती थी ?
५. भोला ने क्या सोचा ?
६. भोला ने भगवान से क्या प्रार्थना की ?
७. लालच में पड कर भोला ने क्या किया ?
८. मुर्गी के पेट से भोला को क्या मिला ?
९. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

व्याकरण

लिंग बदलो :—

मुर्गी, पत्नी, बिल्ली, नर-कौआ, बच्चा, गरीब, गाय, भाई, आदमी, मोर।

अपूर्ण भूतकाल :—

जैसे :— देता था, देते थे, देती थी, देती थीं।

अपूर्ण भूतकालिक क्रियाओं से वाक्यों को पूरा करो।

१. औरतें पानी — —। (भर)
२. मुर्गी अंडा — —। (दे)

३. वे सिनेमा — —। (देख)
४. पेड़ों पर चिड़ियाँ — —। (चहक)
५. घोड़ा तेज़ — —। (दौड़)
६. मज़दूरी से थोड़े पैसे — —। (मिल)

अपूर्ण भूतकाल में बदलो :—

१. ये लड़के खूब खेले थे।
२. हम शाम को सिनेमा गये।
३. राम का भाई यहाँ आया था।
४. बच्ची सोई होगी।
५. औरतें गाना गाती होंगी।
६. मैं सवेरे बाज़ार जा रहा था।
७. नौकर तरकारी लाया?

पाठ १९

गाँव की सफाई

भारत के अधिकांश लोग गाँवों में ही रहते हैं। गाँव में सफाई होती तो बीमारियाँ न फैलतीं। बीमारी न फैलती तो लोग तन्दुरुस्त रहते।

हमें कई गाँवों में नाक बंद करके प्रवेश करना पड़ता है; क्यों कि लोग गाँव के खुले मैदानों में ही पाखाना करते हैं। बच्चे बरामदे में खड़े होकर आंगन में पेशाब करते हैं। इनसे बदबू हवा में फैलती है और बीमारी बढ़ती है।

मनुष्य के मैले पर मक्खियाँ बैठती हैं। वे ही मक्खियाँ खाने की चीजों पर बैठती हैं और वही हम खाते हैं। उससे बीमारी फैलती है। इसी का नाम नरक है।

यह नरक हमारा ही बनाया हुआ है। ऐसे नरक में जो लोग जीते हैं उनको तन्दुरुस्ती कैसे मिलेगी ?

कई लोग रोज़ स्नान करते हैं; भस्म लगाते हैं; हाथ-पाँव दो-दो चार-चार बार साबुन से धोते हैं। लेकिन जिस पर मक्खियाँ बैठती हैं, वह खाना ज़रूर खाते हैं।

गंदी चीज़ों का अच्छा उपयोग हो सकता है। जापान में मनुष्य के मैले का, खाद के रूप में अच्छा उपयोग होता है। इससे फसल खूब बढ़ती है।

गंदी चीज़ों को गाडने से बदबू नहीं आती; बीमारियाँ नहीं फैलतीं। इसके अलावा अच्छी खाद भी मिलती है। अच्छी खाद से भूमि उपजाऊ बनती है। इसलिए सफ़ाई और खेती की दृष्टि से मैली चीज़ों को गाड देना ज़रूरी है।

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

सफ़ाई, तंदुरुस्त, बरामदा, आंगन, बदबू, मक्खी, साबुन, ज़रूर, गंदा, फ़सल, गाडना, अलावा, उपजाऊ।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

गाड देना, अलावा।

जवाब दो :—

१. भारत के ज़्यादा लोग कहाँ रहते हैं ?
२. गाँव के लोग कैसे तन्दुरुस्त रह सकते हैं ?
३. गाँवों में बदबू कैसे फैलती है ?
४. मक्खियों से बीमारी कैसे फैलती है ?
५. गंदी चीज़ों को हमें क्या करना चाहिए ?
६. जापान में गंदी चीज़ों का उपयोग कैसे होता है ?

विशेषण रूप लिखो :—

मैल, सफाई, बीमारी, तन्दुरुस्ती, गंदगी, उपज, ज़रूर।

हेतुहेतुमद् भूतकाल :—

जैसे :— आता तो देखता, दौड़ती तो मिलती, पढते तो उत्तीर्ण होते।

वाक्यों को हेतुहेतुमद् भूतकालिक क्रियाओं से पूरा करो :—

१. गाँव के लोग सफाई से — तो बीमारी न —।

२. वह यहाँ — तो मुझे —।

३. लीला पाँच मिनट के पहले — तो गाडी —।

४. पानी — तो गरमी दूर —।

५ सूरज — तो अंधेरा —।

६ हम में एकता — तो गुलाम न —।

७ अगर मेरे पास पैसा — तो मैं सिनेमा —।

पाठ २०

सरिता

कल-कल, छल-छल कहती सरिता,
निर्भय होकर बहती सरिता।
गरमी-सरदी सहती सरिता,
आगे बढती रहती सरिता॥

पर्वत पर से आती सरिता,
मैदानों को जाती सरिता।
दौड लगाती गाती सरिता,
छिपती फिर दिखलाती सरिता॥

देती सबको पानी सरिता,
सब से बढ़कर दानी सरिता।
हरी बनाती धरती सरिता,
वन में मंगल करती सरिता॥

अभ्यास

अर्थ लिखो :—

गरमी, सरदी, छिपना, धरती।

जवाब दो :—

१. सरिता कहाँ से आती है?
२. सरिता की गति कैसी है?
३. सरिता यहाँ क्या क्या काम करती है?
४. 'देती सब को.........करती सरिता।'
   इस पद का अर्थ बताओ।
   यह पद्य कंठस्थ करो।

पाठ २१

बगुले का बदला

नेपाल में एक चरवाहा था। उसका नाम था दलाई। एक दिन वह गायें चरा रहा था। अचानक एक बगुला उसके पैरों के पास गिर पड़ा।

दलाई ने उसे उठा लिया। एक बाज ने बगुले को घायल कर दिया था। उसके पंखों पर खून के लाल-लाल बिंदु थे। बेचारा पक्षी बार-बार चोंच फाड रहा था।

चरवाहे ने प्यार से उस पर हाथ फेरा। जल के समीप ले जाकर उसके पंख धोये। उसने थोडा जल चोंच में डाल दिया। थोडी देर में वह उड गया।

कुछ दिनों के बाद एक सुन्दर लडकी ने दलाई की माता से प्रार्थना की और उससे दलाई की शादी हो गयी।

लड़की बहुत भली थी। वह दलाई की माता की मन लगाकर सेवा करती थी। दलाई की माता गाँव भर में अपनी बहू की प्रशंसा करती फ़िरती थी।

देश में अकाल पड़ा। दलाई अपनी माता और पत्नी के साथ मज़दूरी की खोज में निकला और राजधानी में पहुँचा। कहीं मजदूरी न मिली। उसको कई दिन तक उपवास करना पड़ा। आखिर स्त्री ने कहा, "मैं मलमल बना दूँगी, तुम बेच लेना। लेकिन जब मैं मलमल बुनूँ तब मेरे कमरे में कोई न आये।"

दलाई नें स्त्री की बात चुपचाप मान ली। उसने अपनी माता से कहा कि जब उसकी स्त्री अपना कमरा

बंद कर ले तो कोई उसे न पुकारे और उसके कमरे में न जाये।

स्त्री ने मलमल बना दिया। दलाई उसे बेचने गया। राजा ने उसे खरीदा। उसे सोने की मुहरें मिलीं। उसकी स्त्री मलमल बनाती और वह बेच लाता। अब वह धनी हो गया। एक दिन दलाई ने सोचा—'मेरी, स्त्री न रूई लेती है, न रंग। फिर वह मलमल कैसे बनाती है?'

दलाई ने छिपकर खिड़की से देखा। कमरे में उसकी स्त्री नहीं है। एक बगुला बैठा है। वह अपने पंख से पतला तार नोचता है और पंजों से मलमल बुनता है। उसके गले में घाव है। घाव का खून वह पंजे से वस्त्र पर छिडक कर छींटे डालता है। दलाई ने समझ लिया कि वही बगुला उसकी स्त्री बना है और उपकार का बदला दे रहा है। दलाई को बडा आश्चर्य हुआ।

दलाई जहाँ का तहाँ खडा रहा। इसी समय उसकी माता ने उसे पुकारा। दलाई बोल पड़ा। बगुला चौंका और खिडकी से उड़ गया।

अब दलाई बडा दुखी हुआ। वह सिर पीटने लगा।

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

चरवाहा, चराना, अचानक, बाज, चोंच, पंख, भला, बहू, अकाल, पुकारना, मुहर, रूई, पतला, पंजा, घाव, खून, छिड़कना, छींटा, चौंकना, नोचना।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

घायल करना, चोंच फाड़ना, अकाल पड़ना, मान लेना, सिर पीटना।

जवाब दो :—

१. दलाई कौन था?
२. दलाई क्या कर रहा था?
३. दलाई के पास क्या गिरा?
४. किसने बगुले को घायल किया था?
५. दलाई ने बगुले की कौन सी सेवा की?
६. दलाई की शादी किससे हुई?
७. एक बार देश में क्या हुआ?
८. दलाई पत्नी को लेकर कहाँ गया?
९. स्त्री ने क्या कहा?
१०. स्त्री कैसे मलमल बुनती थी?
११. दलाई के मन में कौन सा प्रश्न उठा?
१२. उसने अपनी स्त्री की बुनायी कैसे देख ली?

१३. मलमल बुनते देखकर दलाई ने क्या सोचा ?

१४. बगुला क्यों चौंक पडा और उड गया ?

१५. दलाई क्यों सिर पीटने लगा ?

व्याकरण

अ:— 'ने' का प्रयोग।

जैसे:—राम ने एक घोडा देखा।
गोपाल ने दो घोडे देखे।
मोहन ने एक घोडी देखी।
राजू ने दो घोडियाँ देखीं।
राम ने एक घोडे को देखा।
गोपाल ने दो घोडों को देखा।
मोहन ने एक घोडी को देखा
राजू ने दो घोडियों को देखा।
राम ने देखा।
सीता ने देखा।
हमने देखा।
तुम ने देखा।
लडकियों ने देखा।

['ने' प्रत्यय सिखाते समय ऊपर लिखे प्रयोगों के नियम ज़रूर बता दें। कई उदाहरणों के द्वारा नियमों को निकाल लें और फिर उन्हें दृढ करें।]

आ:—सामान्य, आसन्न, पूर्ण, संदिग्ध—इन भूतकालिक क्रियाओं से वाक्यों को पूरा करो :—

१. मैं ने किताब — —।

२. सीता ने चार आम — —।

३. तुम ने क्या — —।

४. लडकियों ने गाना — —।

५. औरतों ने चाय — —।

६. सब लोगों ने गाँधीजी का नाम — —।

७. मेरे भाई ने एक कहानी —।

८. मैं ने चिट्ठी —।

९. एक गोरे ने कैनेडी को —।

१०. उसने दो बैलों को —।

इ:—शुद्ध करो :—

१. मैं ने दो किताबें लायीं।

२. राम ने रोटी खाया था।

३. सीता ने चार आम खायी थी।

४. लडकों ने कलम खरीदे।

५. तुम ने कस्तूरबा का नाम सुने होंगे।

पाठ २२

वर्ग का आरंभ

अध्यापक—जयराम, तुम कब स्कूल आये ?

जयराम—मैं साढे नौ बजे स्कूल आया।

अ :—रमेश, तुम कब आये ?

रमेश—मैं सवा नौ बजे आया।

अ :—गोपाल, तुम कब आये ?

गोपाल—मैं पौने दस बजे आया।

अ :—तुम सब हिन्दी की कापी लाये ?

कई विद्यार्थी—जी हाँ, लाये हैं।

अ :—तुम पाठ लिख चुके ?

वि :—जी हाँ, हम लिख चुके हैं।

अ :—गोपाल, तुम कुछ घबराये हुए से दिखाई पडते हो। बात क्या है ?

(गोपाल रोने लगता है।)

अ :—मैं ने कौन ऐसी बात पूछी कि तुम रोने लगे? रोओ मत।

(गोपाल रोना बंद करता है।)

अ :—तुम क्यों कापी नहीं लाये?

गो :—मैं पाठ न लिख सका। इसलिए नहीं लाया।

अ :—तुम क्यों नहीं लिख सके?

गो :—मैं घर पर नहीं था।

अ :—तुम कहाँ गये थे?

गो :—मैं चाचा के घर गया था।

अ :—तुम कब गये?

गो :—मैं परसों गया।

अ :—तो फ़िर तुम कब लौटे?

गो :—आज सवेरे ही लौटा।

अ :—कल ही क्यों नहीं लौटे?

गो :—चाचाजी ने मुझे जाने नहीं दिया।

अ :—तुम चाचा के घर क्यों गये?

गो :—मेरे चाचा की लड़की का विवाह था।

अ :—तो तुम ने स्कूल का सारा काम छोड दिया?

गो :—मुझे कापी करने का अवसर न मिला।

61/53—6

अ :—नहीं, नहीं! तुम अपनी ख़ुशी में और सब कुछ भूल गये!

गो :—जी नहीं, मुझे स्कूल का काम याद आया। लेकिन एक तो मेरे पास कापी नहीं थी, दूसरे, फ़ुरसत भी नहीं मिली।

अ :—ख़ैर, अब की बार माफ़ी देता हूँ। फ़िर कभी ऐसा न होवे।

अ :—तुम सब जयराम को देखो। आज वह नहाया है, क्या?

कुछ लड़के—वैसा नहीं दीखता।

अ :—जयराम, तुम क्यों नहीं नहाये?

ज :—बुखार चढ़ा था।

अ :—बुखार कब उतरा?

ज :—कल शाम को

अ :—क्या, तुम ने कोई दवा पी?

ज :—जी हाँ, पिताजी ने कुछ दवा पिलायी।

अः —ठीक है, लेकिन तुम ने दांत क्यों नहीं साफ़ किया?

ज :—जी, मैने दांत साफ किया।

अ :—झूठ क्यों बोलते हो ?

ज :—जी नहीं, मैं झूठ नहीं बोला। मैं ने सच ही कहा।

अ :—फिर तुम्हारे दांत क्यों नीले दिखाई पड़ते हैं ?

ज :—जी, दवा का रंग जाता नहीं।

अ :—तो ठीक है।

अ :—लड़को ! मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूँ, सुनो :-

सब लोगों को सबेरे ही दांत साफ करना चाहिये और नहाना भी चाहिए। तन्दुरुस्ती के लिये ये जरूरी हैं। गंदगी से बीमारी होती है। सफ़ाई से तन्दुरुस्ती बढती है। याद रखना। अब हम पाठ पढें। किताब लो।

(सब विद्यार्थी किताब लेते हैं।)

* कापी—प्रतिलेख ; लिखने की बही।

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

चाचा, माफी, बुखार, दवा, घबराना, फुरसत।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

कापी करना, बुखार चढना, फुरसत मिलना, याद आना।

जवाब दो :—

१. गोपाल कापी क्यों नहीं लाया ?
२. गोपाल चाचा के घर क्यों गया ?
३. गोपाल के दांत क्यों नीले दिखायी पडे ?
४. लोग तन्दुरुस्त कैसे रह सकते हैं ?

व्याकरण

सहायक क्रियाएँ :— ‘सक’, ‘चुक’

जैसे :—

पढ सक ; देख सक ; खा चुक ; लिख चुक ।

उदा :—

राम पाठ पढ सकता है।
सीता पाठ पढ सकी।
मैं खाना खा चुका।
लडके पाठ लिख चुके।

‘लग’; ‘दे’

जैसे :—जाने लगा, बोलने लगा, आने दे, पढने दे।

उदा :—

राम स्कूल जाने लगता है।
सीता हिन्दी पढने लगी।
मैं तुमको अंदर आने देता हूँ।
बाप ने मुझे सिनेमा जाने दिया।

'चाह'

जैसे :— पढना चाह, बोलना चाह

माँ भोजन बनाना चाहती है।

वे काम करना चाहते हैं।

मैं ने काम करना चाहा।

'चाहिए'

जैसे :—

करना चाहिए, करने चाहिए, करनी चाहिए।

मुझे एक पाठ लिखना चाहिए।

मुझे दो पाठ लिखने चाहिए।

मुझे एक किताब पढनी चाहिए।

मुझे दो किताबें पढनी चाहिए।

शुद्ध करो :—

१. राम को यह काम करने सका।
२. वे आज पाठ पढ सका।
३. तुमने खाना खा चुका।
४. गोपाल हिन्दी पढ चुकी।
५. सीता गीत गाना लगती है।
६. गोपाल ने हिन्दी सीखने लगी।

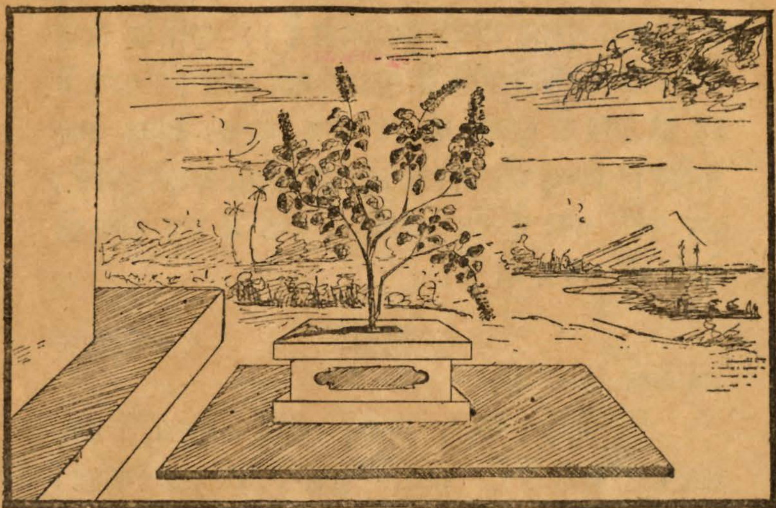
७. मैं उसको जाना दिया।
८. वे नौकर को छुट्टी लेना देता है।
९. औरत गीत गानी चाहती है।
१०. मैं आज दो पाठ पढने चाहा।
११. सब लोग हिन्दी पढनी चाहिए।
१२. वे यहाँ आना चाहिए।

पाठ २३

तुलसी

तुलसी एक छोटा पौधा है। यह पौधा करीब दो हाथ ऊँचा होता है। तुलसी दो तरह की होती है। एक के पत्तों का रंग हरा होता है और दूसरी के पत्तों का रंग काला होता है। ये रामतुलसी और श्यामा तुलसी कहलाती हैं। दक्खिन के लोग श्यामा तुलसी को कृष्ण तुलसी भी कहते हैं। हिन्दू लोग इन पौधों को गमलों में रखते हैं।

तुलसी की बहुत सी टहनियाँ चारों तरफ फैलती हैं। तुलसी के पत्ते कुछ गोलाकार लिए हुए हैं। वे छोटे भी होते हैं। पौधों की प्रत्येक डाल पर फूलों की एक बाल निकलती है। हम इसको मंजरी कहते हैं।



मंजरी में बडी मीठी गन्ध होती है। उस में छोटे-छोटे बीज होते हैं। जब मंजरी पक कर सूख जाती है, तब बीज मिट्टी में गिर जाते हैं। वर्षा के दिनों में इन बीजों से सैकडों छोटे-छोटे पौधे उग आते हैं।

तुलसी में बहुत गुण हैं। उसके पत्तों और फूलों की गन्ध से हवा शुद्ध होती है। जिस घर में तुलसी का पौधा होता है, उस घर में रोग कम आते हैं।

बीमारियों की रोक-थाम में तुलसी बहुत काम आती है। काली मिर्च के साथ तुलसी का काढा बनाकर पिलाने से मलेरिया बुखार जल्दी छूट जाता है। सर्दी के दिनों में तुलसी की चाय पीने से ज़ुकाम नहीं होता। कान में दर्द हो जाय तो तुलसी का रस गरम करके टपका देना चाहिए। बिच्छू और साँप के विष की तुलसी अच्छी दवा है। अब पता चला है कि तुलसी के पत्तों में क्षय रोग को रोकने की क्षमता भी है।

अभ्यास

अर्थ लिखो :—

पौधा, करीब, गमला, डाल, सैकडा, हवा, रोक-थाम काली मिर्च, काढा, जुकाम, टपकाना, क्षमता।

वाक्यों में प्रयोग करो :—

रोक-थाम, पता चलाना।

जवाब दो :—

१. तुलसी का पौधा कैसा होता है ?
२. तुलसी कितनी तरह की होती है ?

३. लोग तुलसी को कहाँ रखते हैं ?
४. तुलसी के पत्ते कैसे होते हैं ?
५. तुलसी के पौधे कैसे उगते हैं ?
६. बीमारियों की रोक-थाम में तुलसी कहाँ तक लाभ दायक होती है ?

व्याकरण

१. नीचे लिखे शब्दों को उचित रूप से मिलाकर सही वाक्य बनाओ :—

मैं	ने	बोला
उस	न	कहा
विमला	हँसने	गयी
बच्चा	समझ	लगा
गोपाल	मैदान में	नहाया
लड़के	नदी में	खेले
हम	हिन्दी	कर चुके
मुझे	काम	सीखनी चाहिए।
उसे	दौड़	दीजिए
लड़कियाँ	बाहर जाने	चाहती हैं
औरतें	अंदर आना	सकती हैं

२. शब्दों को ठीक स्थान पर रख कर सही वाक्य बनाओ :—

(क) कौए सबेरे गाँव बडे की ओर लौटते हैं !

(ख) कोई पक्षी जगत मित्र में नहीं कौए का ।

(ग) किसी एक गरीब में आदमी गाँव रहता था ।

(घ) बहुत गाँधीजी अनुयायि के हैं ।

(ङ) लोग की पूजा मंदिरों में भगवान करते हैं ।

पाठ २४

केला

केले का पेड सब जगह होता है। देखने में यह बहुत सुन्दर लगता है। यह बडा शुभ भी माना जाता है। पूजा और विवाह के मण्डप सजाने में केले के पेड और पत्ते काम आते हैं।

केले के पेड में डालियाँ नहीं होतीं। पेडी से ही एक एक पत्ता निकलता है। इसके पत्ते लंबे-चौडे होते हैं। और किसी पेड के पत्ते इतने बडे नहीं होते। थाली की जगह पर कुछ लोग केले के पत्ते पर भोजन करते हैं।

केला साल भर में फलता है। पहले इससे कमल जैसी पंखुडियों वाला एक बहुत बडा फूल निकलता है।



इस फूल का प्रतिदिन एक दल खुलता है, जिसके अंदर आठ-दस छोटी-छोटी फलियों की पंक्तियाँ दिखाई पड़ती

हैं। फलियों की इस पंक्ति को पंजा कहते हैं। जब सब पंजे बाहर निकल आते हैं तब एक घौद तैयार होता है। केले के फल पकने पर पीले होते हैं। कहीं कहीं लाल और हरे रंग के भी फल होते हैं।

केला बहुत अच्छा फल है। यह खाने में मीठा लगता है। हाथ से छिलका छीलकर भीतर के गूदे को खाते हैं। केवल केले को खाकर मनुष्य अपना पेट भर सकता है। कच्चे केले का साग बनता है। लोग केले को सुखाकर आटा भी बनाते हैं।

केले कई तरह के होते हैं। इन में बीज नहीं होता। मगर कुछ पहाडी केले बीजवाले भी होते हैं। केले के बीज चेचक रोग को रोकने और मिटाने में बडे लाभकारी होते हैं।

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

सजाना, पेडी, थाली, पंखुडी, पंजा, घौद, गूदा, छीलना, साग, चेचक, मिटाना, आटा, सुखाना, कच्चा।

जवाब दो :—

१. केले के पेड कहाँ पैदा होते हैं ?
२. पंजा किसे कहते हैं ?
३. केले के पत्तों को लोग किन किन कामों में लाते हैं ?
४. केले के बीज में किस रोग को रोकने की क्षमता है ?
५. केले के पेड के बारे में दस वाक्य लिखो।

व्याकरण

शुद्ध करो :—

१. राम किताब पढा।
२. वे काम करता होगा।
३. लडके हिन्दी सीखे हैं।
४. पिताजी ने मद्रास जाना लगा।
५. बच्चों ने फल लाया होगा।
६. राम ने वह बात भूली थी।
७. उन्हों ने सभा में दस मिनट बोला।

ठीक सवाल बनाओ :—

१. उसका नाम गोमती है।
२. एक साधू आया है।

३. माधव ने मुझसे कहा।
४. यह गाँधीजी की तस्वीर है।
५. मैं बाज़ार जाता हूँ।
६. वह कल ही गया।
७. उसके पास पाँच रुपये हैं।
८. वह पैदल आया।
९. वह दर्द के कारण रोता है।

पाठ २५

किसान

काट रहा है खेत किसान।
गर्मी से बिलकुल हैरान ॥ १ ॥

वहाँ साफ़ सुथरा मैदान।
वहीं बना इसका खलिहान ॥ २ ॥

बोझ बाँध ले जाते हैं सब।
खोल वहीं फैलाते हैं सब ॥ ३ ॥

बैलों से मलवाते उनको।
बहती हवा उडाते उनको ॥ ४ ॥

देखो अलग हुआ है दाना।
उठा उठा घर उन्हें पठाना ॥ ५ ॥

बैल सभी धन उपजाते हैं।
भूसा ही खाने पाते हैं ॥ ६ ॥

यह दुनिया का रंग निराला।
खुदगर्जी का ढंग निराला ॥ ७ ॥

अभ्यास

अर्थ बताओ :—

साफ-सुथरा, खलिहान, बोझ, मलना, पठाना, खुदगरजी, ढंग।

जवाब दो :—

१. किसान क्यों हैरान हैं ?

२. किसान का खलिहान कहाँ है ?

३. किसान दाना कैसे निकालते हैं ?

४. "बैल सभी..................ढंग निराला" इसका अर्थ समझाओ।
